Article

Role of Communities in Intergenerational Transmission of Culture

संस्कृति के अंतरपीढ़ी हस्तांतरण में समुदायों की भूमिका

Research Review Journal of Cultural Heritage and Traditions
double-blind peer-reviewed and refereed online bi-annual Journal
ISSN (online): XXXX-XXX (applied)
Vol-1 No.1 (Jan-Jun 2026) 14-20
©The Author(s) 2026
https://rrjcht.in/

Received: 13 Sep, 2025
Revised: 29 Nov, 2025
Accepted: 30 Nov, 2025
Published: 24 Feb, 2026

*[1]Malini Yadav and [2]Ritik Verma

[1,2]*Students, Shri Ram Chand Degree College, Agra*

Abstract: *Communities play a central role in the intergenerational transmission of culture by serving as living spaces where knowledge, values, beliefs, and practices are continuously shared and renewed. Cultural transmission does not occur solely through formal institutions but is deeply embedded in everyday social interactions, rituals, oral traditions, and collective activities within families and local communities. This study examines how communities function as custodians of cultural memory, enabling younger generations to internalize cultural meanings through participation, observation, and practice. It explores the mechanisms of intergenerational transmission, including storytelling, festivals, customary practices, language use, and apprenticeship-based learning. The paper also considers the challenges faced by communities in sustaining cultural transmission amid globalization, migration, and changing socio-economic conditions. By emphasizing community agency and participation, the study highlights the importance of inclusive, locally grounded approaches to safeguarding cultural heritage and ensuring cultural continuity in a rapidly changing world.*

Keywords: *Community participation; Intergenerational transmission; Cultural heritage; Oral traditions*

Abstract in Hindi Language: *संस्कृति के अंतरपीढ़ी हस्तांतरण में समुदायों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे ऐसे जीवंत सामाजिक स्थल होते हैं जहाँ ज्ञान, मूल्य, विश्वास और व्यवहार निरंतर साझा किए जाते हैं और पुनर्नवीनीकृत होते रहते हैं। सांस्कृतिक हस्तांतरण केवल औपचारिक संस्थानों के माध्यम से ही नहीं होता, बल्कि यह परिवारों और स्थानीय समुदायों के भीतर दैनिक सामाजिक अंतःक्रियाओं, अनुष्ठानों, मौखिक परंपराओं और सामूहिक गतिविधियों में गहराई से निहित होता है। यह अध्ययन इस बात का विश्लेषण करता है कि समुदाय सांस्कृतिक स्मृति के संरक्षक के रूप में कैसे कार्य करते हैं और किस प्रकार भागीदारी, अवलोकन तथा व्यवहार के माध्यम से युवा पीढ़ी सांस्कृतिक अर्थों को आत्मसात करती है। इसमें कथा-वाचन, उत्सव, प्रथागत व्यवहार, भाषा-प्रयोग और शागिर्दी आधारित शिक्षण जैसी अंतरपीढ़ी हस्तांतरण की प्रक्रियाओं का अध्ययन किया गया है। साथ ही, वैश्वीकरण, प्रवासन और बदलती सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के संदर्भ में सांस्कृतिक हस्तांतरण को बनाए रखने में समुदायों के समक्ष*

*Corresponding Author
Malini Yadav, Student, Shri Ram Chand Degree College, Agra
yadav.malini291299@gmail.com

Scan and Access

Creative Commons Non Commercial CC BY-NC: This article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-Non Commercial 4.0 License (http://www.creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/) which permits non-Commercial use, reproduction and distribution of the work without further permission provided the original work is attributed.

आने वाली चुनौतियों पर भी विचार किया गया है। समुदाय की सक्रिय भूमिका और सहभागिता पर बल देते हुए, यह अध्ययन सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और तीव्र परिवर्तनशील विश्व में सांस्कृतिक निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए समावेशी और स्थानीय रूप से आधारित दृष्टिकोणों के महत्व को रेखांकित करता है।

Keywords: *सामुदायिक सहभागिता; अंतरपीढ़ी हस्तांतरण; सांस्कृतिक विरासत; मौखिक परंपराएँ*

1 | परिचय

अंतरपीढ़ी सांस्कृतिक हस्तांतरण से तात्पर्य उन प्रक्रियाओं से है जिनके माध्यम से ज्ञान, मूल्य, विश्वास, कौशल और व्यवहार एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचते हैं। सामाजिक और मानवशास्त्रीय अध्ययनों में इस हस्तांतरण को वह मूलभूत तंत्र माना जाता है जिसके द्वारा संस्कृतियाँ समय के साथ अपनी निरंतरता बनाए रखती हैं, साथ ही अनुकूलन और परिवर्तन की संभावना भी उत्पन्न करती हैं। संस्कृति जैविक रूप से विरासत में नहीं मिलती, बल्कि यह परिवारों, समुदायों और सामाजिक संस्थानों के भीतर सामाजिक अंतःक्रिया, सहभागिता और साझा अनुभवों के माध्यम से सीखी जाती है (Cavalli-Sforza & Feldman, 1981)।

अंतरपीढ़ी सांस्कृतिक हस्तांतरण का क्षेत्र औपचारिक शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें भाषा का प्रयोग, कथा-वाचन, अनुष्ठान, नैतिक शिक्षण, व्यावसायिक कौशल और सामाजिक व्यवहार के ढाँचे जैसी दैनिक प्रथाएँ भी सम्मिलित हैं। मानवशास्त्री इस बात पर बल देते हैं कि ये प्रक्रियाएँ दैनिक जीवन में गहराई से निहित होती हैं और प्रायः अनौपचारिक, अनुभवात्मक तथा देहधारित होती हैं। अवलोकन, अनुकरण और मार्गदर्शित सहभागिता के माध्यम से समुदाय के युवा सदस्य सांस्कृतिक मानदंडों और अर्थों को आत्मसात करते हैं, जिससे सांस्कृतिक हस्तांतरण एकतरफा सूचना-प्रदान न होकर एक गतिशील और संबंधपरक प्रक्रिया बन जाता है (Ingold, 2000)।

सैद्धांतिक दृष्टिकोण से प्रारंभिक समाजशास्त्रीय और मानवशास्त्रीय अध्ययनों ने सांस्कृतिक हस्तांतरण को मुख्यतः सामाजिक व्यवस्था और स्थिरता बनाए रखने के साधन के रूप में देखा। कार्यात्मकतावादी सिद्धांतकारों का मत था कि पीढ़ियों के माध्यम से संप्रेषित साझा मूल्य और मानदंड सामाजिक एकता और निरंतरता के लिए आवश्यक हैं (Parsons, 1951)। बाद के विद्वानों ने संस्कृति के स्थिर दृष्टिकोण को चुनौती दी और यह प्रतिपादित किया कि सांस्कृतिक हस्तांतरण में सदैव व्याख्या, मोल-भाव और चयनात्मक अनुकूलन शामिल होता है। यह दृष्टिकोण सांस्कृतिक परिणामों के निर्माण में प्रेषकों और ग्रहणकर्ताओं—दोनों की सक्रिय भूमिका को रेखांकित करता है।

सामाजिक अधिगम सिद्धांत सांस्कृतिक ज्ञान के अर्जन को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण ढाँचा प्रदान करता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, अधिगम सामाजिक संदर्भों में अवलोकन, अनुकरण और अंतःक्रिया के माध्यम से होता है, विशेषकर बाल्यावस्था और किशोरावस्था के दौरान (Bandura, 1977)। मानवशास्त्रीय संदर्भों में इस विचार का विस्तार स्थितिगत अधिगम तक किया गया है, जहाँ सांस्कृतिक दक्षता अमूर्त शिक्षण के बजाय सामुदायिक प्रथाओं में सक्रिय सहभागिता के माध्यम से विकसित होती है (Lave & Wenger, 1991)।

हाल के सैद्धांतिक योगदान संस्कृति को एक उत्पाद के बजाय एक प्रक्रिया के रूप में देखते हैं। विद्वानों का तर्क है कि अंतरपीढ़ी हस्तांतरण में निरंतरता और रूपांतरण—दोनों शामिल होते हैं, क्योंकि परंपराएँ बदलती सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप पुनर्व्याख्यायित की जाती हैं। यह दृष्टिकोण उन मानवशास्त्रीय अध्ययनों से मेल खाता है जो यह दर्शाते हैं कि सांस्कृतिक प्रथाएँ इसलिए नहीं टिकतीं कि वे अपरिवर्तित रहती हैं, बल्कि इसलिए टिकती हैं क्योंकि वे आने वाली पीढ़ियों के लिए अर्थपूर्ण बने रहने हेतु पर्याप्त लचीली होती हैं (Hobsbawm & Ranger, 1983)।

वैश्वीकरण, प्रवासन और प्रौद्योगिकीय परिवर्तन से आकार ले रहे समकालीन समाजों में अंतरपीढ़ी सांस्कृतिक हस्तांतरण ने पुनः अकादमिक महत्व प्राप्त किया है। शोधकर्ता अब यह अध्ययन कर रहे हैं कि पारंपरिक हस्तांतरण तंत्र औपचारिक शिक्षा प्रणालियों, मीडिया और अंतरराष्ट्रीय नेटवर्कों के साथ किस प्रकार अंतःक्रिया करते हैं। अतः अंतरपीढ़ी सांस्कृतिक हस्तांतरण की वैचारिक आधारभूमि और सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को समझना यह विश्लेषण करने के लिए आवश्यक है कि समुदाय आधुनिक परिवर्तनों के बीच सांस्कृतिक निरंतरता कैसे बनाए रखते हैं।

2 | सांस्कृतिक अभिकर्ता के रूप में समुदाय

समुदाय सांस्कृतिक अभिकर्ता के रूप में प्राथमिक भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे ऐसे सामाजिक संदर्भ प्रदान करते हैं जिनके भीतर मूल्य, मानदंड, विश्वास और व्यवहार सीखे जाते हैं, अपनाए जाते हैं और पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित होते हैं। समुदायों के भीतर परिवार और कुटुंब (रिश्तेदारी) प्रणालियाँ सांस्कृतिक अधिगम की सबसे तात्कालिक और प्रभावशाली संरचनाएँ होती हैं। मानवशास्त्रीय अनुसंधान यह निरंतर दर्शाता है कि प्रारंभिक समाजीकरण परिवार के भीतर ही होता है, जहाँ बच्चे भाषा, नैतिक संहिताएँ, लैंगिक भूमिकाएँ और दैनिक सांस्कृतिक दिनचर्याएँ अवलोकन, अनुकरण और सहभागिता के माध्यम से सीखते हैं (Bourdieu, 1977)। ये प्रक्रियाएँ प्रायः अनौपचारिक और देहधारित होती हैं, जिससे सांस्कृतिक हस्तांतरण एक औपचारिक पाठ्यक्रम के बजाय एक जीया-जागता अनुभव बन जाता है।

रिश्तेदारी नेटवर्क परिवार के सांस्कृतिक प्रभाव को आगे बढ़ाते हैं, क्योंकि वे साझा मानदंडों और सामूहिक दायित्वों को सुदृढ़ करते हैं। अनेक समाजों में रिश्तेदारी संरचनाएँ सामाजिक कर्तव्यों, अनुष्ठानों, उत्तराधिकार और विवाह प्रथाओं को व्यवस्थित करती हैं, जिससे सांस्कृतिक मूल्य दीर्घकालिक सामाजिक संबंधों में अंतर्निहित हो जाते हैं। शास्त्रीय मानवशास्त्रीय अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि रिश्तेदारी केवल जैविक व्यवस्था नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक ढाँचा है जो पहचान, अपनत्व और निरंतरता को आकार देता है (Fortes, 1969)। रिश्तेदारी-आधारित जमावड़ों, समारोहों और पारस्परिक दायित्वों के माध्यम से सांस्कृतिक ज्ञान पीढ़ियों में दोहराया जाता है और सामान्यीकृत होता है।

परिवार और रिश्तेदारी से परे, स्थानीय सामाजिक नेटवर्क—जैसे पड़ोस समूह, धार्मिक संस्थाएँ, पेशागत समुदाय और स्वैच्छिक संगठन—सांस्कृतिक जीवन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये नेटवर्क उत्सवों, अनुष्ठानों और सामुदायिक आयोजनों में सामूहिक सहभागिता के लिए स्थान प्रदान करते हैं, जहाँ सांस्कृतिक अर्थों का व्यवहारिक प्रदर्शन होता है और उनकी पुनर्पुष्टि होती है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि ऐसी सामुदायिक प्रथाएँ साझा स्मृति और एकजुटता को बढ़ावा देती हैं, जिससे सांस्कृतिक निरंतरता के लिए आवश्यक अपनत्व की भावना सुदृढ़ होती है (Putnam, 2000)।

समुदाय परंपरा और परिवर्तन के बीच मध्यस्थ की भूमिका भी निभाते हैं। जहाँ परिवार विरासत में मिली प्रथाओं का संप्रेषण करते हैं, वहीं स्थानीय सामाजिक नेटवर्क शिक्षा, प्रवासन और प्रौद्योगिकीय परिवर्तन जैसी नई सामाजिक वास्तविकताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए अनुकूलन को संभव बनाते हैं। सांस्कृतिक मानवशास्त्र के अध्ययनों से पता चलता है कि समुदाय समकालीन संदर्भों में प्रासंगिक बने रहने के लिए कुछ परंपराओं का चयनात्मक संरक्षण करते हैं और अन्य में परिवर्तन करते हैं (Hobsbawm & Ranger, 1983)। यह अनुकूलन क्षमता समुदाय की सक्रिय भूमिका को रेखांकित करती है और दर्शाती है कि सांस्कृतिक हस्तांतरण न तो निष्क्रिय है और न ही एकरूप।

समकालीन समाजों में, बढ़ते व्यक्तिवाद और गतिशीलता के बावजूद, सांस्कृतिक अभिकर्ता के रूप में समुदाय की भूमिका महत्वपूर्ण बनी हुई है। यद्यपि औपचारिक संस्थाएँ और मीडिया सांस्कृतिक अधिगम को प्रभावित करते हैं, फिर भी परिवार और स्थानीय नेटवर्क वे संबंधपरक आधार प्रदान करते हैं जिनके माध्यम से सांस्कृतिक मूल्य समझे और आत्मसात किए जाते हैं। अतः अंतरपीढ़ी सांस्कृतिक हस्तांतरण में समुदाय की भूमिका को समझना संस्कृति को एक सामूहिक प्रक्रिया के रूप में देखने में सहायक होता है, जो दैनिक सामाजिक संबंधों में निहित होती है, न कि किसी अमूर्त या स्थिर विरासत के रूप में।

3 | सांस्कृतिक हस्तांतरण की प्रक्रियाएँ

सांस्कृतिक हस्तांतरण विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है, जो समुदायों को साझा अर्थों, मूल्यों और व्यवहारों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित करने में सक्षम बनाती हैं। इनमें मौखिक परंपराएँ, अनुष्ठान, उत्सव और दैनिक व्यवहार सांस्कृतिक हस्तांतरण के सबसे स्थायी और प्रभावी साधनों में से हैं। मानवशास्त्रीय अध्ययनों में इस बात पर बल दिया गया है कि ये प्रक्रियाएँ दैनिक जीवन में गहराई से निहित होती हैं और औपचारिक शिक्षण की अपेक्षा सहभागिता और अनुभव पर आधारित होती हैं, जिससे संस्कृति एक जीया-जागता और निरंतर पुनरुत्पादित होने वाला प्रक्रिया बन जाती है (Ingold, 2000)।

मौखिक परंपराएँ सांस्कृतिक हस्तांतरण के सबसे प्राचीन रूपों में से एक हैं। कथा-वाचन, मिथक, किंवदंतियाँ, गीत, कहावतें और लोककथाएँ न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि ऐतिहासिक स्मृति, नैतिक मूल्यों और सामाजिक मानदंडों के भंडार भी हैं। पारिवारिक और सामुदायिक परिवेश में इनके बार-बार दोहराव से सामूहिक पहचान सुदृढ़ होती है और विश्व को समझने के लिए व्याख्यात्मक ढाँचे प्राप्त होते हैं। विद्वानों का मत है कि

मौखिक हस्तांतरण लचीलापन प्रदान करता है, क्योंकि कथाएँ अपने मूल अर्थों को बनाए रखते हुए नए संदर्भों के अनुरूप ढल सकती हैं, जिससे निरंतरता और प्रासंगिकता दोनों सुनिश्चित होती हैं (Goody, 1987)।

अनुष्ठान संरचित और प्रतीकात्मक क्रियाएँ होते हैं, जो साझा विश्वासों और सामाजिक व्यवस्था की पुनः पुष्टि करते हैं। जन्म, विवाह और मृत्यु जैसे जीवन-चक्र अनुष्ठान महत्वपूर्ण संक्रमणों को चिह्नित करते हैं और सांस्कृतिक मूल्यों को व्यक्तिगत अनुभवों में अंतर्निहित करते हैं। मानवशास्त्रीय अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि अनुष्ठान व्यक्तिगत जीवन को सामूहिक इतिहास और नैतिक प्रणालियों से जोड़कर निरंतरता की भावना उत्पन्न करते हैं (Turner, 1969)। अनुष्ठानों में सहभागिता के माध्यम से युवा पीढ़ी सांस्कृतिक मानदंडों को अमूर्त व्याख्या के बजाय देहधारित अभ्यास द्वारा आत्मसात करती है।

उत्सव संस्कृति की सामुदायिक अभिव्यक्तियाँ होते हैं, जिनमें अनुष्ठान, प्रदर्शन और सामाजिक अंतःक्रिया का समन्वय होता है। मौसमी और धार्मिक उत्सव सामूहिक उत्सव के माध्यम से समुदाय के सदस्यों को एकत्र करते हैं, जिससे सामूहिक स्मृति और सामाजिक एकजुटता सुदृढ़ होती है। सांस्कृतिक सिद्धांतकारों के अनुसार, उत्सव सांस्कृतिक मूल्यों को दृश्य और भावनात्मक रूप से प्रभावशाली बनाकर सांस्कृतिक बंधनों के नवीकरण और परंपराओं के हस्तांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (Durkheim, 1912)। उत्सवों की आवृत्त और अनुकूलनीय प्रकृति उन्हें सामाजिक परिवर्तन के साथ विकसित होते हुए भी जीवित बनाए रखती है।

औपचारिक सांस्कृतिक आयोजनों के अतिरिक्त, दैनिक व्यवहार जैसे भोजन की आदतें, पहनावा, भाषा का प्रयोग, अभिवादन के तरीके और कार्य-रूटीन भी सांस्कृतिक हस्तांतरण की सशक्त प्रक्रियाएँ हैं। ये व्यवहार परिवार और समुदाय के संदर्भों में अवलोकन और अनुकरण के माध्यम से सीखे जाते हैं। Bourdieu (1977) ने इस प्रक्रिया को *हैबिटस* के निर्माण के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ नियमित सामाजिक अंतःक्रिया के माध्यम से आत्मसात होती हैं और पुनरुत्पादित होती रहती हैं। इस प्रकार दैनिक व्यवहार सांस्कृतिक मूल्यों को सामान्यीकृत करते हैं और पीढ़ियों में उनकी निरंतरता सुनिश्चित करते हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो मौखिक परंपराएँ, अनुष्ठान, उत्सव और दैनिक व्यवहार मिलकर सांस्कृतिक हस्तांतरण की एक परस्पर-संबद्ध प्रणाली का निर्माण करते हैं। ये प्रक्रियाएँ समुदायों को सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने के साथ-साथ अनुकूलन और पुनर्व्याख्या के लिए स्थान भी प्रदान करती हैं। इन प्रक्रियाओं की समझ यह स्पष्ट करती है कि संस्कृति केवल औपचारिक संस्थानों के माध्यम से संरक्षित नहीं होती, बल्कि वह दैनिक सामाजिक अनुभवों के माध्यम से निरंतर पुनर्निर्मित होती रहती है।

4 | अंतरपीढ़ी सांस्कृतिक हस्तांतरण की चुनौतियाँ

तीव्र सामाजिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय परिवर्तनों से आकार ले रहे समकालीन समाजों में अंतरपीढ़ी सांस्कृतिक हस्तांतरण के समक्ष बढ़ती हुई चुनौतियाँ दिखाई देती हैं। जहाँ ऐतिहासिक रूप से सांस्कृतिक हस्तांतरण स्थिर सामुदायिक संरचनाओं और प्रत्यक्ष आमने-सामने की अंतःक्रिया पर आधारित रहा है, वहीं वैश्वीकरण, प्रवासन, आधुनिकीकरण और मीडिया जैसी शक्तियों ने उन संदर्भों को बदल दिया है जिनमें सांस्कृतिक ज्ञान सीखा और व्यवहार में लाया जाता है। विद्वानों का मत है कि ये शक्तियाँ परंपरा को पूरी तरह मिटा नहीं देतीं, परंतु वे हस्तांतरण के स्थापित मार्गों को कमजोर करती हैं और प्रतिस्पर्धी मूल्य-प्रणालियाँ प्रस्तुत करती हैं, जो सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को पुनःआकार देती हैं (Shils, 1981)।

वैश्वीकरण ने सीमाओं के पार वस्तुओं, विचारों और जीवन-शैलियों के प्रवाह के माध्यम से अंतर-सांस्कृतिक संपर्क को तीव्र किया है। यद्यपि यह प्रक्रिया सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करती है, फिर भी यह समरूपीकरण (होमोजेनाइज़ेशन) की ओर भी ले जा सकती है, जहाँ प्रभुत्वशाली वैश्विक संस्कृतियाँ स्थानीय परंपराओं पर हावी हो जाती हैं। Appadurai (1996) के अनुसार, वैश्विक सांस्कृतिक प्रवाह युवा पीढ़ी को वैकल्पिक पहचान और आकांक्षाओं से परिचित कराकर पारंपरिक अधिकार और निरंतरता को बाधित करते हैं। परिणामस्वरूप, विरासत में मिली सांस्कृतिक प्रथाएँ अपनी दैनिक प्रासंगिकता खो सकती हैं या केवल प्रतीकात्मक रूप में ही बनी रह जाती हैं।

प्रवासन अंतरपीढ़ी हस्तांतरण के लिए एक और प्रमुख चुनौती प्रस्तुत करता है। जब व्यक्ति या परिवार—विशेषकर राष्ट्रीय या सांस्कृतिक सीमाओं के पार—स्थानांतरित होते हैं, तो वे सामाजिक परिवेश समाप्त हो जाते हैं जो पहले सांस्कृतिक प्रथाओं को सुदृढ़ करते थे। मानवशास्त्रीय अध्ययनों से पता चलता है कि प्रवासी समुदायों को भाषा, अनुष्ठानों और प्रथागत व्यवहारों को उन युवा पीढ़ियों तक पहुँचाने में कठिनाई होती है, जिनका

समाजीकरण भिन्न सांस्कृतिक मानदंडों वाले मेज़बान समाजों में होता है (Castells, 2010)। यद्यपि परंपराएँ संशोधित या औपचारिक रूपों में बनी रह सकती हैं, परंतु आत्मसातीकरण के दबाव और सीमित सामुदायिक समर्थन के कारण दैनिक सांस्कृतिक प्रथाएँ अक्सर कमजोर पड़ जाती हैं।

आधुनिकीकरण भी सामाजिक संस्थाओं और जीवन-शैलियों को पुनर्गठित कर सांस्कृतिक हस्तांतरण को प्रभावित करता है। नगरीकरण, औद्योगिक रोजगार और औपचारिक शिक्षा जैसी प्रक्रियाएँ शागिर्दी, कथा-वाचन और सामुदायिक सहभागिता पर आधारित पारंपरिक अधिगम के लिए उपलब्ध समय और स्थान को कम कर देती हैं। Giddens (1991) के अनुसार, आधुनिक समाज आत्मपरकता (रिफ़्लेक्सिविटी) को बढ़ावा देते हैं, जिससे लोग विरासत में मिली परंपराओं को बिना प्रश्न किए स्वीकार करने के बजाय उन पर विचार-विमर्श करते हैं। इससे अंतरपीढ़ी अधिकार कमजोर पड़ सकता है, क्योंकि बुज़ुर्ग अब ज्ञान के एकमात्र संरक्षक नहीं माने जाते।

मीडिया और डिजिटल प्रौद्योगिकियों का प्रभाव भी सांस्कृतिक अधिगम के पैटर्न को उल्लेखनीय रूप से बदलता है। जनसंचार माध्यम और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म युवा पीढ़ी को वैश्विक कथाओं, लोकप्रिय संस्कृति और उपभोक्तावादी मूल्यों से परिचित कराते हैं, जो अक्सर स्थानीय परंपराओं से प्रतिस्पर्धा करते हैं। यद्यपि मीडिया प्रलेखन और पुनर्जीवन में सहायक हो सकता है, फिर भी विद्वान चेतावनी देते हैं कि यह सहभागितामूलक अधिगम के स्थान पर निष्क्रिय उपभोग को बढ़ावा देकर सांस्कृतिक हस्तांतरण को खंडित भी कर सकता है (Castells, 2010)। स्क्रीन के माध्यम से संप्रेषित प्रथाएँ अपने संदर्भगत गहराव और देहधारित अर्थ को खो सकती हैं, जिससे अर्थपूर्ण अंतरपीढ़ी सहभागिता के अवसर कम हो जाते हैं।

समग्र रूप से, वैश्वीकरण, प्रवासन, आधुनिकीकरण और मीडिया का प्रभाव मिलकर अंतरपीढ़ी सांस्कृतिक हस्तांतरण के लिए जटिल चुनौतियाँ उत्पन्न करता है। ये शक्तियाँ पारंपरिक अधिगम तंत्रों को बाधित करती हैं, साथ ही सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के नए रूप भी प्रस्तुत करती हैं। इन चुनौतियों को समझना ऐसी रणनीतियाँ विकसित करने के लिए आवश्यक है जो समुदायों को समकालीन वास्तविकताओं से अलग किए बिना सांस्कृतिक निरंतरता का समर्थन कर सकें।

5 | सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने की रणनीतियाँ

तेजी से हो रहे सामाजिक परिवर्तनों के बीच सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने के लिए सुविचारित और समन्वित रणनीतियों की आवश्यकता होती है, जो संस्कृति को एक जीवंत और समुदाय-केंद्रित प्रक्रिया के रूप में पहचानती हों। विद्वानों में व्यापक सहमति है कि सांस्कृतिक परंपराएँ निष्क्रिय संरक्षण से नहीं, बल्कि समुदायों की सक्रिय सहभागिता, सहायक शैक्षिक प्रथाओं और सक्षम नीतिगत ढाँचों के माध्यम से जीवित रहती हैं (Smith, 2006)। ये सभी रणनीतियाँ मिलकर यह सुनिश्चित करती हैं कि सांस्कृतिक ज्ञान अर्थपूर्ण बना रहे, व्यवहार में रहे और पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित होता रहे।

सामुदायिक सहभागिता सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने का केंद्रीय तत्व है। समुदाय सांस्कृतिक ज्ञान के प्राथमिक संरक्षक होते हैं और परंपराओं, अनुष्ठानों, भाषाओं तथा मूल्यों की संदर्भगत समझ रखते हैं। विरासत अध्ययन में किए गए शोध इस बात पर बल देते हैं कि जब समुदाय सांस्कृतिक निर्णय-निर्माण में प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित होते हैं, तब परंपराएँ अधिक प्रासंगिक और लचीली बनी रहती हैं (UNESCO, 2003)। सहभागितामूलक दृष्टिकोण उत्सवों, कथा-वाचन, शागिर्दी और सामूहिक अनुष्ठानों के माध्यम से अंतरपीढ़ी अंतःक्रिया को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे युवा सदस्य औपचारिक शिक्षण तक सीमित न रहकर व्यवहार के माध्यम से संस्कृति को सीखते हैं। ऐसी सहभागिता स्वामित्व और अपनत्व की भावना को सुदृढ़ करती है, जो दीर्घकालिक सांस्कृतिक स्थिरता के लिए आवश्यक है।

शिक्षा बदलते सामाजिक संदर्भों में सांस्कृतिक ज्ञान के हस्तांतरण के लिए संरचित अवसर प्रदान कर एक पूरक भूमिका निभाती है। औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा पाठ्यक्रमों में स्थानीय इतिहास, भाषाओं, कलाओं और परंपराओं को सम्मिलित कर सांस्कृतिक निरंतरता का समर्थन कर सकती है। शैक्षिक सिद्धांतकारों का तर्क है कि सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील शिक्षा घरेलू स्तर पर होने वाले सांस्कृतिक अधिगम और संस्थागत ज्ञान-प्रणालियों के बीच की दूरी को पाटती है, जिससे विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक विरासत को महत्व देते हुए आलोचनात्मक चेतना भी विकसित कर पाते हैं (Banks, 2008)। विद्यालयों के अतिरिक्त, समुदाय-आधारित शिक्षण स्थल, संग्रहालय और सांस्कृतिक केंद्र अनुभवात्मक और अंतरपीढ़ी अधिगम के महत्वपूर्ण स्थल के रूप में कार्य करते हैं।

उतनी ही महत्वपूर्ण है नीतिगत समर्थन, जो सांस्कृतिक स्थिरता के लिए आवश्यक संस्थागत परिस्थितियाँ निर्मित करता है। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ढाँचे अब कानूनी मान्यता, वित्तीय सहायता और सामुदायिक सशक्तिकरण के माध्यम से अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के महत्व को स्वीकार

कर रहे हैं। अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर यूनेस्को का अभिसमय इस बात पर बल देता है कि नीतियाँ परंपराओं को स्थिर रूपों में जड़ बनाने के बजाय उनके संप्रेषण, प्रलेखन और अनुकूलन को सुगम बनाएँ (UNESCO, 2003)। सांस्कृतिक विविधता को प्रोत्साहित करने, अल्पसंख्यक भाषाओं की रक्षा करने और स्थानीय सांस्कृतिक साधकों को समर्थन देने वाली नीतिगत पहलें आधुनिक समाजों में सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

अतः सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने की प्रभावी रणनीतियों के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण आवश्यक है। सामुदायिक सहभागिता प्रामाणिकता और प्रासंगिकता सुनिश्चित करती है, शिक्षा संरचित हस्तांतरण और अनुकूलन को सुगम बनाती है, और नीतिगत समर्थन संसाधन तथा वैधता प्रदान करता है। जब ये सभी तत्व एक साथ कार्य करते हैं, तब सांस्कृतिक परंपराएँ अपने मूल अर्थों को बनाए रखते हुए विकसित होती रहती हैं और समुदाय आधुनिक चुनौतियों का सामना करते हुए भी अपनी सांस्कृतिक जड़ों को सुरक्षित रख पाते हैं।

6 | निष्कर्ष

अंतरपीढ़ी सांस्कृतिक हस्तांतरण एक जटिल और गतिशील प्रक्रिया है, जो सांस्कृतिक निरंतरता और सामाजिक एकता के केंद्र में स्थित है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि संस्कृति निष्क्रिय रूप से विरासत में नहीं मिलती, बल्कि परिवारों, रिश्तेदारी नेटवर्कों और स्थानीय समुदायों के भीतर होने वाली दैनिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से सक्रिय रूप से सीखी जाती है, व्यवहार में लाई जाती है और पुनर्व्याख्यायित होती है। मौखिक परंपराएँ, अनुष्ठान, उत्सव और नियमित सामाजिक व्यवहार वे महत्वपूर्ण माध्यम हैं, जिनके द्वारा सांस्कृतिक अर्थ, मूल्य और पहचान पीढ़ियों तक संरक्षित और संप्रेषित होते रहते हैं।

साथ ही, वैश्वीकरण, प्रवासन, आधुनिकीकरण और मीडिया जैसी समकालीन शक्तियों ने सांस्कृतिक हस्तांतरण के पारंपरिक मार्गों को काफी हद तक बदल दिया है। ये शक्तियाँ अक्सर स्थापित सामुदायिक संरचनाओं को बाधित करती हैं और प्रतिस्पर्धी मूल्य-प्रणालियाँ प्रस्तुत करती हैं, जिससे विरासत में मिली प्रथाओं की निरंतरता के समक्ष चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं। फिर भी, संस्कृति के लुप्त होने के बजाय, ये परिवर्तन समुदायों की उस अनुकूलन क्षमता को उजागर करते हैं, जिसके माध्यम से वे नई सामाजिक परिस्थितियों में भी परंपराओं को अर्थपूर्ण बनाए रखते हैं।

यह विमर्श इस तथ्य को रेखांकित करता है कि सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने के लिए समुदाय-आधारित सहभागिता, शिक्षा और सहायक नीतिगत ढाँचों पर आधारित सुनियोजित रणनीतियाँ आवश्यक हैं। समुदायों को अपनी सांस्कृतिक विरासत के सक्रिय संरक्षक बने रहना चाहिए, शिक्षा प्रणालियों को सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील और स्थानीय रूप से निहित ज्ञान को समाहित करना चाहिए, तथा नीतियों को संस्कृति को स्थिर या मात्र प्रतीकात्मक न मानकर जीवंत परंपराओं के रूप में समर्थन देना चाहिए। जब ये सभी तत्व एक साथ कार्य करते हैं, तब सांस्कृतिक हस्तांतरण लचीला और सुदृढ़ बनता है।

अंततः, अंतरपीढ़ी सांस्कृतिक हस्तांतरण को परिवर्तन के माध्यम से निरंतरता की प्रक्रिया के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है। समुदाय की सक्रिय भूमिका को महत्व देकर और सहायक शैक्षिक व नीतिगत परिवेश को प्रोत्साहित करके, समाज यह सुनिश्चित कर सकता है कि सांस्कृतिक परंपराएँ तीव्र परिवर्तनशील विश्व में भी पहचान, अपनत्व और सामाजिक जीवन को निरंतर रूप से आकार देती रहें।

संदर्भ

[1] Appadurai, A. (1996). *Modernity at large: Cultural dimensions of globalization*. Minneapolis: University of Minnesota Press.

[2] Bandura, A. (1977). *Social learning theory*. Englewood Cliffs, NJ: Prentice Hall.

[3] Banks, J. A. (2008). *An introduction to multicultural education* (4th ed.). Boston: Pearson.

[4] Bourdieu, P. (1977). *Outline of a theory of practice*. Cambridge: Cambridge University Press.

[5] Castells, M. (2010). *The power of identity* (2nd ed.). Oxford: Wiley-Blackwell.

[6] Cavalli-Sforza, L. L., & Feldman, M. W. (1981). *Cultural transmission and evolution: A quantitative approach*. Princeton: Princeton University Press.

[7] Durkheim, E. (1912). *The elementary forms of religious life*. Paris: Alcan. (English translation, 1995).

[8] Fortes, M. (1969). *Kinship and the social order*. London: Routledge & Kegan Paul.

[9] Giddens, A. (1991). *Modernity and self-identity: Self and society in the late modern age*. Cambridge: Polity Press.

[10] Goody, J. (1987). *The interface between the written and the oral*. Cambridge: Cambridge University Press.

[11] Hobsbawm, E., & Ranger, T. (1983). *The invention of tradition*. Cambridge: Cambridge University Press.

[12] Ingold, T. (2000). *The perception of the environment: Essays on livelihood, dwelling and skill*. London: Routledge.

[13] Lave, J., & Wenger, E. (1991). *Situated learning: Legitimate peripheral participation*. Cambridge: Cambridge University Press.

[14] Parsons, T. (1951). *The social system*. New York: Free Press.

[15] Putnam, R. D. (2000). *Bowling alone: The collapse and revival of American community*. New York: Simon & Schuster.

[16] Shils, E. (1981). *Tradition*. Chicago: University of Chicago Press.

[17] Smith, L. (2006). *Uses of heritage*. London: Routledge.

[18] Turner, V. (1969). *The ritual process: Structure and anti-structure*. Chicago: Aldine Publishing.

Cite this article

Role of Communities in Intergenerational Transmission of Culture: **संस्कृति के अंतरपीढ़ी हस्तांतरण में समुदायों की भूमिका**. (2026). *Research Review Journal of Cultural Heritage and Traditions*, *1*(1), 14-20. https://rrjcht.in/index.php/rrjcht/article/view/3